अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : आठवीं – जैन धर्म भूषण (परीक्षा 16 जुलाई, 2017)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से कम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) प्राण,भूत, जीव और सत्व की हिंसा नहीं करना ही धर्म कहा गया है-

(क) दशवैकालिक सूत्र में (ख) आचारांग सूत्र में

(ग) जीवाजीवाभिगम सूत्र में (घ) ठाणांग सूत्र में ( )

(b) 'न तुअट्टाविज्जा' का अर्थ है -

(क) सोवे नहीं (ख) चले नहीं

(ग) सुलावे नहीं (घ) खड़ा करावे नहीं ( )

(c) 'निचोडे नहीं' इस अर्थ के लिए प्रयुक्त प्राकृत शब्द है -

(क) न पविलिज्जा (ख) न आयाविज्जा

(ग) न पयाविज्जा (घ) न आवीलिज्जा ( )

(d) उत्कृष्ट तीन गाउ अवगाहना होती है -

(क) बेइन्द्रिय की (ख) स्थलचर की

(ग) तेइन्द्रिय की (घ) चौरेन्द्रिय की ( )

(e) चार लेश्यायें पाती हैं -

(क) असन्नी मनुष्य में (ख) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में

(ग) गर्भज मनुष्य में (घ) युगलिक मनुष्य में ( )

(f) चौथा आरा उतरते और पाँचवा आरा लगते गर्भज मनुष्य की स्थिति होती है-

(क) 1 करोड़ पूर्व (ख) एक सौ वर्ष झाझेरी

(ग) 20 वर्ष (घ) 16 वर्ष ( )

(g) 'घुन' की उपमा से उपमित किया गया है -

(क) लोभ (ख) माया

(ग) मान (घ) क्रोध ( )

(h) 'उवहाणवं' का अर्थ है -

(क) तपस्वी (ख) युक्तियुक्त

(ग) अनासक्त (घ) अनायुष ( )

(i) आयताकार पर्वतों में श्रेष्ठ हैं -

(क) रूचक (ख) निषध

(ग) सुमेरु (घ) सुदर्शन ( )

(j) आराधक संयमी (साधु) तथा संयमासंयमी (श्रावक) की गति जघन्य पहला देवलोक बतायी गई है-

(क) औपपातिक सूत्र में (ख)तृतीय कर्मग्रंथ में

(ग) विशेषावश्यक भाष्य में (घ) पन्नवणा सूत्र में ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) 'भंतं' का अर्थ भ्रमण करना नहीं है। ( )

(b) बिना गर्भ के उत्पन्न होने वाले कीड़े आदि सम्मूर्च्छिम हैं। ( )

(c) दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन का नाम धर्मप्रज्ञप्ति नहीं है। ( )

(d) जीवाभिगम सूत्र की प्रथम प्रतिपत्ति में प्राण और योग ये दो अंतिम द्वार हैं। ( )

(e) असन्नी मनुष्य में चार उपयोग पाये जाते हैं। ( )

(f) करोड़पूर्व या इससे कम स्थिति वाले सन्नी पर्याप्त मनुष्य ही वैक्रिय शरीर कर सकते हैं। ( )

(g) 'माया मित्ताणि नासेइ' उत्तराध्ययन सूत्र के 29वें अध्ययन में बताया गया है। ( )

(h) क्षत्रियों में विश्वसेन नामक चक्रवर्ती प्रधान है। ( )

(i) 'सूत्रकृतांग सूत्र' उत्कालिक होने से वीरत्थुइ का स्वाध्याय भी 34 अस्वाध्याय टालकर दिन और रात्रि के अंतिम प्रहर में होता है। ( )

(j) मिथ्यात्व अवस्था में आयुष्य बंध होने पर ही मनुष्य से मरकर युगलिक मनुष्य बनता है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) चरम अवस्था में भी मुझको ग्रहण कर साधक शीघ्र ही स्वर्ग लोक को प्राप्त करते हैं। .....

(b) मैं दूसरा अधर्म द्वार हूँ। .....

(c) मैं थैली से उत्पन्न होने वाला जीव हूँ। .....

(d) मेरे उदय से जीव को भोग की अभिलाषा होती है। .....

(e) मेरी उत्कृष्ट अवगाहना 12 योजन है। .....

(f) मेरी उत्कृष्ट स्थिति आधा पल्योपम और पचास हजार वर्ष है। .....

(g) मेरे सामने सभी सुख-दुःख प्रकट किये जा सकते हैं। .....

(h) मैं सभी धर्मों में श्रेष्ठ हूँ। .....

(i) मैं सुवर्ण कुमार देवताओं का आनंददायक क्रीड़ास्थान हूँ। .....

(j) मेरा फल सामायिकादि 5 चारित्र है। .....

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2 = (28)**

a) सव्वभूयप्पभूयस्स,समं भूयाइं पासओ।

पिहियासवस्स दंतस्स, पावं कम्मं न बंधइ।। गाथा का भावार्थ लिखिए।

.....

.....

(b) पाँचवें महाव्रत में परिग्रह रखना पाप है। कैसे ?

.....

.....

(c) निम्न शब्दों में अर्थ लिखिए।

सब्भिंतरं ..... परिसागओ .....

विन्नाया ..... इइ .....

(d) नारकी के एक दण्डक में कौन-कौनसी समुद्घात पायी जाती है ?

.....

.....

(e) पाँच स्थावर और असन्नी मनुष्य में प्राप्त लेश्या लिखिए।

.....

.....

(f) युगलिक मनुष्य की अवगाहना लिखिए।

.....

.....

(g) माया उत्पत्ति के कोई दो कारण लिखिए।

.....

.....

(h) **लोभ को जीतने के कोई दो उपाय लिखिए।**

.....

.....

(i) **गाथा को पूर्ण कीजिए।**

अणुत्तरं धम्ममिणं .....

.....**णं विसिट्ठे।।**

(j) **गाथा को पूर्ण कीजिए।**

कोहं च माणं .....

.....**ण कारवेइ।।**

(k) **निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए।**

अज्झत्थदोसा ..... **अपडिण्णं** .....

मुदागरे ..... **विज्जं** .....

(l) **निम्न गाथा का भावार्थ लिखिए।**

थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चंदो व ताराण महाणुभावे।

गंधेसु वा चंदणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीण अपडिन्नमाहु।।

.....

.....

.....

(m) **उत्कृष्ट आराधना के नाम, अर्थ व फल लिखिए।**

.....

.....

(n) **भगवती सूत्र शतक 8 उद्देशकं 6 में अकृत्यसेवी आराधक के विषय में क्या वर्णन किया गया है ?**

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - **14x3 = (42)**

(a) **पच्छावि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति अमरभवणाइं।**

जेसिं पिओ तवो संजमो य, खंती य बंभचेरं य।। गाथा का भावार्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(b) **रिक्त स्थान की पूर्ति करके भावार्थ लिखिए-**

जो जीवे.....

.....**नाहीइ संजमं।।**

भावार्थ.....

.....

.....

(c) **चौथे व्रत में मुनि क्या प्रतिज्ञा करते हैं ? समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

(d) **निम्न अर्थ वाले प्राकृत शब्द लिखिए।**

भागना .....

आत्मा के हितार्थ .....

लोहमय श्लाका से .....

बुझवावे नहीं .....

कटी हुई डाल पर .....

पुण्यपाप को .....

(e) **किस प्रकार के साधक की सुगति सुलभ होती है ?**

.....

.....

.....

.....

(f) **पाँच स्थावर और असन्नी मनुष्य में योग द्वार 15 भेदों की अपेक्षा से लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(g) **सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में अवगाहना लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(h) **तीन विकलेन्द्रिय तथा 5 असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में गति-आगति द्वार समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

(i) **एक दण्डक नारकी तथा 13 दण्डक देवता में लेश्या द्वार समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

(j) **गर्भज मनुष्य की काल की अपेक्षा स्थिति द्वार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(k) **लोभ को जीतने के कोई तीन उपाय लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(l) **गाथा को पूर्ण कर भावार्थ लिखिए।**

से भूइपण्णे .....

.....**तमं पगासे।।**

भावार्थ-.....

.....

.....

.....

(m) **गाथा को पूर्ण कर भावार्थ लिखिए।**

ठिईण सेट्ठा.....

.....**परमत्थि णाणी।।**

भावार्थ-.....

.....

.....

.....

(n) **आराधना का अर्थ लिखते हुए बतलाइए कि प्रमुख आराधना कौनसी है और क्यों ?**

.....

.....

.....

.....